अनेकान्त तीसरा नेत्र

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मानव के पास दो आंखें हैं। इन दो आंखों से अनुकूलता एवं प्रतिकूलता को वह देखता रहता है किन्तु अनेकान्त एक ऐसा नेत्र है जिसके द्वारा इन दोनों से परे सम्भाव से देखा जाता है। राग–द्वेष के कारण आंखों के सामने मोह का पर्दा पड़ जाता है। इसे अज्ञान कहा जाता है। दृष्टि बदल जाती है। यह कर्ता भाव है। कर्ता भाव का अर्थ–यह मेरा है, मैं इसे बनाने वाला हूं, मैं सब कुछ जानता हूं। ये सब बातें अहंकार और कर्ता भाव को बढ़ाती है। किसी कार्य को करने में अनेक कारण होते हैं। किन्तु जब व्यक्ति अपने को कर्ता मान लेता है तो वह अहंकार करता है। राग–द्वेष के भाव को दूर करना ज्ञान नेत्र से ही सम्भव है। अनेकान्त ही तीसरा नेत्र है। जो वस्तु जैसी है उसे वैसा समझना सत्य का दर्शन करना है। अनेकान्त में सभी दृष्टियां किसी न किसी ढंग से सत्य होती है। सत्यांश सभी में है लेकिन पूर्ण सत्य कोई नहीं है।

तीसरा नेत्र भीतर का नेत्र है– वह है अनेकान्त। अनेकान्त शब्द अनेक और अन्त दो शब्दों से मिलकर बना है। अनेक का अर्थ होता है–एक से अधिक। एक से अधिक दो भी हो सकते हैं और अनन्त भी। दो और अनन्त के बीच में अनेक कार्य संभव हैं तथा अन्त का अर्थ धर्म अर्थात् गुण है। प्रत्येक वस्तु में अनन्त गुण विद्यमान हैं, अतः जहाँ अनेक का अर्थ अनन्त होगा, वहाँ अन्त का अर्थ गुण लेना चाहिए। इस कथन के अनुसार अर्थ होगा अनन्तगुणात्मक वस्तु ही अनेकान्त है, किन्तु जहाँ अनेक का अर्थ दो लिया जायेगा, वहाँ अन्त का अर्थ धर्म होगा तब यह कहा जायेगा कि परस्पर विरुद्ध प्रतीत होने वाले दो धर्मों का एक ही वस्तु में होना अनेकान्त है।

एक वस्तु में वस्तुत्व की उपजाने वाली परस्पर विरुद्ध दो शक्तियों का प्रकाशित होना अनेकान्त है। वस्तु का स्वरूप अनेकान्तात्मक है। प्रत्येक वस्तु अनेक गुण–धर्मों से युक्त है। अनन्त धर्मात्मक वस्तु ही अनेकान्त है। वस्तु का स्वरूप अनेकान्तात्मक है। वही वस्तु है और

वही वस्तु नहीं है, वही वस्तु नित्य है और वही वस्तु अनित्य है, इस प्रकार अनेकान्त का प्ररूपण छल मात्र है। अनेकान्त छल रूप नहीं है, क्योंकि जहाँ वक्ता के अभिप्राय से भिन्न अर्थ की कल्पना करके वचन विघात लिया जाता है, वहाँ छल होता है। जैसे नवकम्बलो देवदत्तः यहाँ नव शब्द के दो अर्थ होते हैं–एक नव संख्या और दूसरा नया। तो नूतन विवक्षा कहे गये नव शब्द का नव संख्या रूप अर्थ विकल्प करके वक्ता के अभिप्राय से भिन्न अर्थ की कल्पना छल कही जाती है। किन्तु सुनिश्चित मुख्य गौण विवक्षा से संभव अनेक धर्मों का सुनिर्णीत रूप से प्रतिपादन करने वाला अनेकान्त छल नहीं हो सकता, क्योंकि इसमें वचनविघात नहीं किया गया है अपितु यथावस्थित वस्तुतत्व का निरूपण किया गया है। अर्थात् जो वस्तु जैसी है, उसको उसी अनुरूप उसी अभिप्रायपूर्वक कहने से छल का ग्रहण नहीं होता है।

जो वस्तु तत् है वही अतत् है, जो एक है वही अनेक है, जो सत् है वही असत् है, जो नित्य है वह अनित्य है। इस प्रकार एक वस्तु में वस्तुत्व की उत्पादक परस्पर विरुद्ध दो शक्तियों का प्रकाशित होना अनेकान्त है। अनेकान्तवाद संशयवाद नहीं है। कुछ लोग संशयवाद का आरोप लगाते हैं। सामान्य धर्म का प्रत्यक्ष होने से विशेष धर्मों का प्रत्यक्ष न होने पर किन्तु उभय विशेषों का स्मरण होने से संशय होता है। जैसे धुंधली शक्ति में स्थाणु और पुरुषगत ऊँचाई आदि सामान्य धर्म की प्रत्यक्षता होने पर स्थाणुगत कोटर पक्षिनिवास तथा पुरुषगत सिर खुजाना, कपड़ा हिलने आदि विशेष धर्मों के न दिखने पर किन्तु इन विशेषों का स्मरण रहने पर ज्ञान दो कोटियों में दोलायित हो जाता है कि यह स्थाणु है या पुरुष। किन्तु अनेकान्तवाद में विशेष धर्मों की अनुपलब्धि नहीं है।

सभी धर्मों की सत्ता अपनी–अपनी निश्चित अपेक्षाओं से स्वीकृत है। तत्तद् धर्मों का विशेष प्रतिभास निर्विवाद सापेक्ष रीति से बताया गया है। संशय का यह आधार भी उचित नहीं है कि अस्ति आदि धर्मों को पृथक्–पृथक् सिद्ध करने वाले हेतु हैं या नहीं? यदि नहीं हैं तो प्रतिपादन कैसा? यदि हैं तो एक ही वस्तु में परस्पर विरुद्ध धर्मों की सिद्धि होने पर संशय

होना ही चाहिए, क्योंकि यदि विरोध होता तो संशय होता। किन्तु अपनी–अपनी अपेक्षाओं से संभावित धर्मों में विरोध की कोई संभावना ही नहीं है।

यदि वस्तु सर्वथा नित्य हो तो वह उदय अस्त को प्राप्त नहीं हो सकती और न उसमें क्रियाकारक की ही योजना बन सकती है। जो सर्वथा असत् है उसका कभी जन्म नहीं होता और जो सत् है उसका कभी नाश नहीं होता। अनेकान्त की अभिव्यक्ति को स्याद्वाद कहते हैं। इसको सापेक्षवाद भी कहते हैं। अनेकान्त सबको जोड़ता है तोड़ता नहीं। भगवान् महावीर ने अनेकान्त का जो सिद्धांत दिया है वह तीसरा नेत्र है। इसमें विवाद को जगह नहीं है। विवाद बुद्धि के स्तर पर होता है प्रज्ञा के स्तर पर विवाद समाप्त हो जाता है। सबको साथ लेकर चलने के लिए अनेकान्तवाद को स्वीकार करना पड़ेगा। शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लिए अनेकान्तवाद का सिद्धान्त सबसे उपयोगी है। सबका साथ सबका विकास अनेकान्तवाद से सम्भव है। यह जोड़ने का सिद्धान्त है अनेकान्तवाद अनाग्रह है।